

आधुनिक महिला साहित्यकारों के साहित्य में नारी चेतना

शीतल पटेल*

सार संक्षेप:

नारी के योगदान का मूल्यांकन साहित्य में करना हो अथवा किसी अन्य क्षेत्र में, वह संभावतः किसी अन्य क्षेत्र में आज पीछे नहीं है। आज सभी क्षेत्रों में नारी ने पुरुष से साझेदारी निभाई है। महिलाओं में बढ़ती चेतना और जागरूकता ने उनकी पारंपरिक छवि को तोड़ा है।

साहित्य में भी महिलाओं की भागीदारी जिस तेजी से हो रही है उसे देखते हुए नारी अभिव्यक्ति की सामर्थ्य पर हैरान होने जैसी कोई बात नहीं रहेगी। लेखन को नारी और पुरुष लेखन में बाँटने से बेहतर था कि नारी लेखन उस लेखन को कहा जाता, जिसकी नायिका के इर्द-गिर्द पूरी रचना घूमती रहती, चाहे उसे किसी ने भी लिखा होता, नारी ने या पुरुष ने।

चाबिरूप शब्द: प्रस्तावना, इतिहास, हिन्दी पद्य और गद्य में नारी चेतना, लेखिकाओं में नारी चेतना, समापन, संदर्भ

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

प्रस्तावना:

हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श की जहाँ तक बात है तो बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हमारे देश में जो नारीवादी आंदोलन हुए उन आंदोलनों से भारतीय साहित्य काफी प्रभावित हुआ है। इसकी पृष्ठभूमि के रूप में यूरोप और अमेरिका की जिस नारीवादी विचारधारा के प्रभाव के कारण ऐसा हुआ है वह स्वीकार करने के बावजूद कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श कभी तो संसार की समस्त नारियों द्वारा समस्त पुरुषों का विरोध करने वाली विचारधारा के रूप में उभर कर सामने आया तो कभी यह स्त्री की उन्मुक्त सेक्स की वकालत करने वाले साहित्य के रूप में सामने आया।

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएँ देखने को मिलती हैं। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री-विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की 'श्रृंखला की कड़ियाँ' नारी सशक्तिकरण का सुंदर उदाहरण है।

साहित्य में नारी चेतना का इतिहास:

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरुष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखी है। अतः स्त्री-विमर्श की शुरुआती गूंज पश्चिम में देखने को मिली। सन १९६० ई. के आस-पास नारी सशक्तिकरण ने ज़ोर पकड़ा जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन की अन्तर्द्वन्द्वो एवं आपबीती घटनाओं को उकेरना शुरू किया और आज स्त्री-विमर्श ज्वलंत मुद्दा है।

आठवें दशक तक आते-आते यहीं विषय ने एक आंदोलन का रूप ले लिया जो शुरुआती स्त्री-विमर्श से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध हुआ। आज मैत्रेयी पुष्पा तक आते-आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गई जो पितृसत्ता समाज को झकझोर दिया। नारी मुक्ति की गूंज अब देह मुक्ति के रूप में परिलक्षित होने लगी।

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

हिन्दी पद्य और गद्य में नारी चेतना:

समाज के दो पहलू स्त्री-पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है। उसके बाद भी पुरुष समाज ने महिला समाज को अपने बराबर की समानता से वंचित रखा। यही पक्षपात द्रष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने को मजबूर किया जो आज ज्वलंत मुद्दा नारी-चेतना के रूप में द्रष्टिगोचर है।

आदिकाल से ही नारियों की दशा दयनीय एवं सोचनीय थी। स्त्रियों की दशा को देखकर विवेकानंद कहते हैं- स्त्रियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभाव नहीं है। विवेकानंद जी महिला समाज की वास्तविक दशा से चिंतित, देशा एवं समाज की भलाई, महिला समाज की तरक्की के बगैर असंभव बताया है।

सुशीला टाकभौरे के काव्य संग्रह 'स्वातिबुंद' और 'खारे मोती' तथा 'यह तुम भी जानो' काफी चर्चित रहे हैं। इनकी विद्रोहणी कविता में आक्रोश की ध्वनि सुनाई पड़ती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहायजी नारी जीवन का वास्तविक चित्र खींचा है, उन्होंने अपने काव्यों में स्वतंत्रता के

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

बाद स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में “यत्र नार्यस्तु पुज्यंते तत्र रम्यन्ते देवता” कहा जाता था आज वही अनेक शोषण का शिकार हो रही है।

भारत सरकार ने सन २००१ को महिलाओं के सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया। अब नारी अपने हर एक अधिकार को लेकर रहेगी। यही लड़ाई स्त्री-विमर्श या नारी सशक्तिकरण के रूप में परिलक्षित होता है।

लेखिकाओं में नारी चेतना:

हिन्दी कथा साहित्य में नारी चेतना का ज़ोर आठवें दशक तक आते-आते एक आंदोलन का रूप ले लिया। आठवें दशक के महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय हैं- ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुगदल, माणिक मोहनी, मृदुला गर्ग मृदुला सिंहा मंजुला भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पांडेय, नासिरा शर्मा, दीप्ति खंडेलवाल, कुसुम अंचल, इन्दु जैन, सुनीता जैन, प्रभा खेतान, सुधा अरोरा, क्षमा शर्मा, अर्चना वर्मा, निमिता सिंह, अल्का सरावगी, जाया जादवानी, मुक्ता रमणिका गुप्ता आदि ये सभी लेखिकाओं ने नारी मन

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

की गहराइयों को अंतर्द्वंद्वो तथा अनेक समस्याओं का अंकन संजीदगी से किया है।

स्त्री-विमर्श वस्तुतः स्वाधीनता के बाद की संकल्पना है। स्त्री के प्रति होने वाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है। डॉ. संदीप रणभिरकर के शब्दों में- “स्त्री-विमर्श स्त्री के स्वयं की स्थिति के बारे में सोचने और निर्णय करने का विमर्श है। सदियों से होते आये शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतन ने ही स्त्री-विमर्श को जन्म दिया है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्थाने स्त्री समाज को हमेशा अंधकारमय जीवन जीनेको मजबूर किया है। लेकिन आज की नारी चेतनशील जिसे अच्छेबुरे का ज्ञान है। इसीलिए अब इस व्यवस्था का बहिष्कार कर स्वच्छंदात्मक जीवन जीने को आतुर दिखाई पड़ती है। नारी अस्तित्व को लेकर अपने-अपने समय पर कई विद्वानों ने चिंता व्यक्त की है। तुलसीदास जी ने “ढोर-गँवार, शूद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी” कहकर नारी को प्रताड़ना के पात्र समजा है तो मैथिलीशरण गुप्त जी ने “अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आंखों में पानी” कहकर नारी की स्थिति पर चिंता व्यक्त की है।

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

प्रसाद ने “नारी तुम केवल श्रद्धा हो” कहा है तो शेक्सपियर ने “दुर्बलता तुम्हारा नाम ही नारी है” आदि कहकर नारी अस्तित्व को संकीर्ण बताया है।

हिन्दी कथा लेखिकाओं ने अपने-अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। अमृता प्रीतम के रसीदी टिकट, कृष्णा सोबती- मित्रों मरजानी, मन्नू भण्डारी-आपका बनती, चित्रा मुद्गल- आबां एवं एक जमीन अपनी, ममता कालिया- बेघर, मृदुला गर्ग कठ गुलाब, मैत्रयी पुष्पा- चक एवं अल्मा कबूतरी, प्रभा खेतान के छिन्नमस्ता, पद्मा सचदेव के अब न बनेगी देहरी, राजीसेठ की तत्सम, मेहरूनीशा परवेज का अकेला पलाश, शशि प्रभा शास्त्री की सीढ़ियाँ, कुसुम अंचल के अपनी-अपनी यात्रा, शैलेश मटियानी की बावन नदियों का संगम, उषा प्रियंवदा के पचपन खंभे आदि में नारी संघर्ष को देखा जा सकता है। डॉ. ज्योतिकिरण के शब्दों में- “इस समाज में जब स्त्रियाँ अपनी समज और काबिलियत जाहीर करती हैं तब वह कुलच्छनी मानी जाती हैं, जब वह खुद विवेक से कम करती हैं तब मर्यादाहीन समजी जाती हैं। अपनी इच्छाओं, अरमानों के लिए जब वह आत्मविश्वास के साथ लड़ती हैं और गैर

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

समझौतावादी बन जाती है, तब परिवार और समाज के लिए वह चुनौती बन जाती है।“

समापन:

महिला लेखिकाओं की लड़ाई डॉ. ज्योतिकिरण की गद्यांश में देखी जा सकती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि, नारी आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषित रही है, पुरुष प्रधान समाज मान मर्यादा के आड़ में सदा उसे दबाकर रखना चाहा। कभी घर की इज्जत कहकर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अंदर कैदी रखा। इन्हीं परंपरागत पितृसत्तात्मक बेड़ियों को बांधने की लड़ाई है- स्त्री-चेतना।

समसामयिक काल में नारी समता की एक नई चेतना भारतीय समाज में व्याप्त हुई है। बहुत प्रसन्नता की बात है कि स्त्री लेखन कि चर्चा अब हर जगह होने लगी है। यह निश्चय ही महिला रचनाकारों के बढ़ते महत्व को रखांकित करता है।

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

संदर्भ सूची:

१. आजकाल: मार्च २०१३- पृष्ठ २०
२. वहीं - पृष्ठ -२९
३. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ ८२
४. उपनिवेश में स्त्री, प्रभा खेतान, पृष्ठ ३५
५. नारी विमर्श: दशा और दिशा, सं. डॉ. एम फिरोज खान, आकाश पब्लिशर्स, गाजियाबाद, संस्करण- २०१०, पृष्ठ १७